International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 4; April 2017; Page No. 227-232

बघेलखण्ड : धार्मिक पर्यटन स्थल का अध्ययन

डॉ. प्रीति पटेल
एम.ए., पी–एच.डी. (इतिहास) – अ.प्र. सिंह वि.वि. रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
बघेलखण्ड अत्यन्त प्राचीन है अपने धार्मिक व राजनैतिक महत्व के अतिरिक्त धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। धार्मिक पर्यटन केन्द्रों से आशय ऐसे स्थानों से है, जो सजीवता, रमणीयता, अद्भुत–प्रकृति, रोमांच व आकर्षण जैसे गुणों से परिपूर्ण हो, लोगों के लिए ऐसे स्थान आदिकाल से ही ज्ञान, दर्शन, जिज्ञासा, कौतूहल आदि के विषय रहे हैं। पर्यटन के घटकों में स्थानीय दर्शनीय– स्थल का महत्वपूर्ण स्थान होता है। बघेलखण्ड क्षेत्र के अन्तर्गत सर्वाधिक तीर्थस्थल सतना जिलों में पाये जाते हैं, इन तीर्थों में चित्रकूट और उसके चातुर्दिक विद्यमान धार्मिक स्थल अत्यन्त महत्वपूर्ण है। चित्रकूट के महत्व का गुणगान आदि कवि वाल्मीकी, पुराणों के रचयिता महर्षि व्यास, महाकवि कालिदास, संस्कृत नाटककार भवभूति, संतकवि तुलसी, मुसलमान कवि रहीम ने मुक्त कण्ठ से किया है। बघेलखण्ड के पर्यटन स्थलों में अमरकंटक प्रसिद्ध तीर्थ और नयनाभिराम पर्यटन स्थल है। विंध्य और सतपुड़ा पर्वतमालाओं के बीच 1065 मीटर की उंचाई पर स्थित यह हरा–भरा होने के साथ–साथ काफी लुभावना भी है।

कूट शब्द: बघेलखण्ड, धार्मिक पर्यटन स्थल, चित्रकूट, अमरकंटक

प्रस्तावना
वर्तमान समय में आधुनिक जीवन शैली एवं भौतिकतावादी समाज में मानव–जीवन मशीन की तरह बनकर रह गया है। लोगों को अपने बारे में सोचने की फुरसत नहीं है। जीवन में सर्वत्र चिंता, कमाने की अंधी दौड़, प्रसिद्धि की चाहत एवं स्वार्थपरता का महौल हैं। ऐसे में ये स्थल कुछ पलों के लिए ही सही, लोगों को सुकून एवं ताजगी से भर देते हैं। जिज्ञासुओं को सोचने पर विवश कर देते हैं। लोगों को जीविकोपार्जन का साधन प्रदान करते हैं। इतिहास से सबक लेकर सबको साथ लेकर चलने के साथ ही लोगों को जोड़ने एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को भी जागृत करते हैं। विगत कुछ दशकों में वैश्विक–स्तर पर पर्यटन केन्द्रों की महत्ता एवं लोगों के बढ़ते रुझान के कारण सरकार और समाज ने भी इस ओर ध्यान देना आरंभ कर दिया है। फलस्वरूप यह आज संगठित उद्योग के रूप में स्थापित हो गया है।
यहाँ की संस्कृति, कला एवं पर्यटन केन्द्रों की पहचान देश–विदेशों तक है। इन पर्यटन केन्द्रों का विवरण एवं महत्व निम्नानुसार है–

सतना जिले के धार्मिक पर्यटन स्थल
कामदगिरि : इस पवित्र पर्वत का काफी धार्मिक महत्व है। श्रद्धालु कामदगिरि पर्वत की 5 कि.मी. की परिक्रमा कर अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण होने की कामना करते हैं। जंगलों से घिरे इस पर्वत के तल पर अनेक मंदिर बने हुए हैं। चित्रकूट के लोकप्रिय कामतानाथ और भरत मिलाप मंदिर भी यहीं स्थित है।[1]

रामघाट: मंदाकिनी नदी के तट पर बने रामघाट में अनेक धार्मिक क्रियाकलाप चलते रहते हैं। घाट में गेरुआ वस्त्र धारण किए साधु–सन्तों को भजन और कीर्तन करते देख बहुत अच्छा महसूस होता है और शाम हो होने वाली यहाँ की आरती मन को काफी सुकून पहुंचाती है।

जानकी कुण्ड : रामघाट से 2 कि.मी. की दूरी पर मंदाकिनी नदी के किनारे जानकी कुण्ड स्थित है। जनक पुत्री होने के कारण सीता को जानकी कहा जाता था। माना जाता है कि जानकी यहाँ स्नान करती थीं। जानकी कुण्ड के समीप ही राम जानकी रघुवीर मंदिर और संकट मोचन मंदिर है।[4]

स्टफिक शिला : जानकी कुण्ड से कुछ दूरी पर मंदाकिनी नदी के किनारे ही यह शिला स्थित है। माना जाता है कि इस शिला पर सीता के पैरों के निशान मुद्रित हैं। कहा जाता है कि जब वह इस शिला पर खड़ी थीं तो जयंत ने काक रूप धारण कर उन्हें चोंच मारी थी। इस शिला पर राम और सीता बैठकर चित्रकूट की सुन्दरता निहारते थे।[5]

अनुसुइया आश्रम : स्टफिक शिला से लगभग 4 कि.मी की दूरी पर घने वनों से घिरा यह एकान्त आश्रम स्थित है। इस आश्रम में अत्रि मुनि, अनुसुइय, दत्तात्रेयय और दुर्वाशा मुनी की प्रतिमा स्थापित हैं।[6]

गुप्त गोदावरी : नगर से 18 कि.मी. की दूरी पर गुप्त गोदावरी स्थित हैं। यहाँ दो गुफाएँ है– एक गुफा चौड़ी और ऊंची है। प्रवेश द्वार संकरा होने के कारण इसमें आसानी से नहीं घुसा जा सकता है। गुफा के अंत में एक छोटा तालाब है जिसे गोदावरी नदी कहा जाता है। दूसरी गुफा लंबी और संकरी है जिससे हमेशा पानी बहता रहता है। कहा जाता है कि इस गुफा के अंत में राम और लक्ष्मण ने दरबार लगाया था।[2]

हनुमान धारा : पहाड़ी के शिखर पर स्थित हनुमान धारा में हनुमान की एक विशाल मूर्ति है। मूर्ति के सामने तालाब में झरने से पानी गिरता है। कहा जाता है कि यह धारा श्रीराम ने लंका दहन से आए हनुमान के आराम के लिए बनवाई थी। पहाड़ी के शिखर पर ही 'सीता रसोई' है। यहाँ से चित्रकूट का सुन्दर दृश्य देखा जा सकता है।[3]

भरत कूप : कहा जाता है कि भगवान राम के राज्याभिषेक के लिए भरत ने भारत की सभी नदियों से जल एकत्रित कर यहाँ रखा था। अत्रि मुनि के परामर्श पर भरत ने जल एक कूप में रख दिया था। इसी कूप को भरत कूप के नाम से जाना जाता है। भगवान राम को समर्पित यहाँ एक मंदिर भी है।[2]

गणेश बागः करबी से डेढ़ कि.मी. दक्षिण में देश के प्राचीन गौरव तथा समृद्धि का प्रतीक–स्वरूप गणेश बाग पेशवा नरेशों की कीर्ति संजोये खड़ा है। इसका निर्माण उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में श्रीमन्त विनायकराव पेशवा ने अपने आमोद–प्रमोद के लिए कराया था। यहां की इमारतों का निर्माण भारतीय स्थापात्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। बीच में प्राचीन शैली का भव्य षट्कोणी पंचमन्दिर है, जिसके ऊपरी भाग में भित्ति–प्रस्तरों की बारीक कटाई करके 'खजुराहों' की भांति देव–देवताओं की असंख्य मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गयी है। सामने एक सरोवर है, जिससे इसकी शोभा और भी बढ़ गयी है। पश्चिमी भाग में एक बड़ा ही भव्य जलाशय है, जिसमें कूप और वापी का सुन्दर सम्मिश्रण है। यह तीन खण्डों का है और इसके दो खण्ड प्रायः पानी से भरे रहते हैं। गर्मियो में दूसरा खण्ड भी खुल जाता है। पर सरकार द्वारा विधनतः संरक्षित–इमारत घोषित किये जाने के बाद सुरक्षा तथा मरम्मत के अभाव में भारतीय शिल्प माला का अद्भुत नमूना धीरे–धीरे धराशायी होता हुआ स्मृति शेष ही रह जाता दिख रहा है।[1]

रीवा जिला के धार्मिक पर्यटन स्थल : रीवा जिला का प्रमुख नगर, तहसील जिला और संभाग का मुख्यालय है। यह नगर अंग्रेजी शासनकाल में रीवा राज्य और बाद में विन्ध्यप्रदेश की राजधानी भी रहा है। बीहर और बिछिया नदियों के संगम पर बसा यह नगर सतना, इलाहाबाद, शहडोल, रीवा की सभी तहसीलों, विकासखण्डों, मुख्यालय और प्रमुख नगरों से जुड़ा है। सोलहवीं शती ई0 में बाँधव नरेश विक्रमादित्य ने सबसे पहले इसे अपनी राजधानी बनाया था। यहाँ का प्रसिद्ध तोरण द्वार, जिसे पुतरिहा द्वार कहा जाता है, गूर्गी से लाया गया था। यह द्वारा महल के सामने है। यह नगर शिक्षा का प्रमुख केन्द्र है। यहाँ विश्वविद्यालय, मेडिकल कालेज, इंजीनियरिंग कालेज और कृषि महाविद्यालय है। प्रमुख उद्योगों में बीड़ी, फर्नीचर तथा चमड़े के कार्य है।[1] यहाँ के धार्मिक पर्यटन स्थल इस प्रकार है –

लक्ष्मण बाग : रीवा जिला मुख्यालय से लगभग 5 कि0मी0 की दूरी पर बिछिया नदी के किनारे लक्ष्मण बाग स्थित है। लगभग 150 वर्षों से यह जनता की धार्मिक आस्था का प्रतीक बना हुआ है। रीवा महाराजा विश्वनाथ सिंह के आग्रह से 1841 ई0 में ब्रम्हशिला स्थान से महात्मा मुकुन्दाचार्य का रीवा नगर में आगमन हुआ। महात्मा जी वेदान्त के मर्मज्ञ और सिद्ध पुरूष थे। कार्तिक सुदी 11 वि0सं0 1898 में युवराज रघुराज सिंह ने उनसे दीक्षा ले ली उसके उपलक्ष्य में उन्हें राज्य की ओर से लक्ष्मणपुर गाँव के अतिरिक्त छोटी छड़ी, चमर, म्याना, मशाल, आदि प्रदान किये गये।[4–5]

लखौरी बाग : रीवा नरेश महाराजा रघुराज सिंह की रानी सौभाग्य कुमारी ने लखौरी बाग का निर्माण 1876 ई0 में कराया था। यहाँ के मदनमोहन मंदिर के प्रवेश द्वार की भित्ति पर एक बड़ा अभिलेख अंकित है, जिसमें इस मंदिर के निर्माण से संबंधित पूरी जानकारी दी गई है। उपर्युक्त अभिलेख में बताया गया है कि रघुराज सागर के निर्माण में पचास हजार एक सौ उनचास रूपये दस आना छह पाई, मंदिर में अठारह हजार चार सौ सैंतीस रूपये तीन आना छः पाई और मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा में बयासी हजार सात सौ रूपये सात आना दो पैसे छः पाई खर्च हुआ था। इस प्रकार समस्त निर्माण कार्य में एक लाख इकसठ हजार दो सौ सतासी रूपये एक आना दो पैसे छः पाई खर्च हुए।

अखाड़ खाट : रीवा में गूदड़दास सांई का अखाड़ घाट स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। गूदड़दास का दूसरा नाम प्रेमदास भी था। वे जाति के ब्राम्हण थे और जयपुर स्थित गलता स्थान के शिष्य थे। वे खड़ाऊ पहनकर जल पर चल लेते थे। महाराजा अमर सिंह उनके परम भक्त थे। राजा साहब ने उनके निवास के लिये अखाड़ घाट आश्रम का निर्माण कराया था।[7]

पचमठा : इसकी स्थापना विक्रमादित्य की महारानी ने कराई थी। रीवा के प्रमुख पूजा स्थलों में इसकी गणना की जाती है। यहाँ पर एक प्राचीन मंदिर है, जिसे टंकेश्वर – महादेव का मंदिर कहा जाता है। इस मंदिर के पूर्व के पूर्व की ओर लक्ष्मीनारायण का एक प्राचीन मंदिर है। जिसे पाण्डेन टोला के एक स्वर्णकार ने बनवाया था।

नृत्य राघवशरण का मंदिर : महाराजा रघुराज सिंह के शासनकाल में अयोध्या से महात्मा नृत्य राघवशरण का आगमन हुआ। अतः घोघर मोहल्ला में उनके लिये एक मंदिर का निर्माण करा दिया गया। यहीं पर महात्मा जी ने अपना आश्रम भी बना लिया।

चिरहुला : रीवा जिला मुख्यालय से लगभग 5 कि0मी0 की दूरी पर चिरहुला का हनुमान मंदिर, रीवा–गुढ़ मार्ग पर स्थित है। कहा जाता है कि महन्त सुखदेव प्रसाद के शिष्य हनुमानदास ने महाराजा भाव सिंह के शासनकाल में हनुमान की प्रतिष्ठा की थी। यहाँ पर हर मंगलवार और शनिवार को हनुमान भक्तों का जमावड़ा होता है।

रघुनाथ मंदिर : यह मंदिर रीवा के अमहिया मोहल्ला में स्थित है। महाराजा विश्वनाथ संत प्रियादास के भक्त थे। जब कभी संत महाराज आते थे, तब उनके आवास की व्यवस्था इसी मंदिर में की जाती थी। इस मंदिर का निर्माण 1835 ई0 में हुआ था।

जगन्नाथ मंदिर : रीवा नगर के दक्षिण गोविन्दगढ़ मार्ग पर बिछिया नदी के किनारे लगभग 6 एकड़ भूमि पर एक मंदिर स्थित है। मंदिर का निर्माण रीवा महाराजा वेंकटरमण सिंह के शासन काल में हुआ था। निर्माण के पश्चात् राज्य की ओर से मंदिर के राग–भोग के लिये दो गांव प्रदान किये गये थे। किन्तु मंदिर के पुजारी के गांवों से संबंधित सनद के बारे में अनभिज्ञता प्रकट की। मंदिर भगवान जगन्नाथ को समर्पित है। यहाँ पर विभिन्न पर्वों पर पर धार्मिक आयोजन होते रहते हैं, जिसमें समीपवर्ती ग्रामों के लोग बढ़–बढ़ कर सम्मिलित होते हैं।

महामृत्युंजय मंदिर : इस मंदिर का निर्माण महाराजा भार (भाव) (1660 से 1994 ई0) ने कराया था। यह मंदिर जगन्नाथ मंदिर उत्तर में है। महामृत्युंजय के समीप ही गुर्गी से लाई गणेश की विशाल अष्टभुजी मूर्ति प्रतिष्ठित है।

गुसांई आश्रम : रीवा नगर के कटरा में गुसांई सम्प्रदाय के महात्माओं का प्रसिद्ध आश्रम था। महाराजा अजीत सिंह की रानी सुल्तान कुंवरि के साथ विजयपुर से निकिलगिरि नामक एक गुसांई महात्मा आया था। महारानी ने उसके लिये बाबा का कटरा मोहल्ला स्थापित कर वहां एक तालाब निर्माण कराया और तालाब की मेड़ पर गुसांई के लिये कुटिया बनवा दी। निकिलगिरि के बाद क्रमशः नेसवलगिरि, खुशियालगिरि, रणजीतगिरि और गोपालगिरि महात्मा हुए। गोपालगिरि संयम साधना न कर सका। और आश्रम छोड़कर नर्मदा नदी के किनारे रहने लगा। अब यह आश्रम समाप्त हो गया था।[4–5]

जानकी बाग : इस स्थान पर महाराजा विश्वनाथ सिंह की पुत्री जानकी कुंवरि ने एक मंदिर की स्थापना की थी।

जानकीदास का अखाड़ा : प्रयाग के जानकीदास नामक एक संत रीवा तरहटी मुहल्ला में अशोक वृक्ष के नीचे रहते थे। महाराजा विश्वनाथ सिंह ने उन्हें उपरहटी में स्थान देकर उनका आश्रम बनवा दिया।

बड़ी दरगाह : यह दरगाह रीवा नगर के अमहिया मुहल्ले में है। रीवा महाराजा अजीत सिह (1755–1809 ई0) के शासनकाल में इमामशाह नामक एक फकीर रीवा आये। वे सिद्ध पुरूष थे। महाराजा को 1796 ई0 के नैकहाई युद्ध में विजयी होने का आशीर्वाद उन्होंने ही दिया था। अतः महाराजा ने अमहिया में एक मस्जिद बनवा दी और इमामशाह के मरने के बाद वहीं पर उनकी दरगाह भी बनवा दी। अमहिया के शिव मंदिर से लगा हुआ भभूतखना था। उसी में फकीर साहब रहते थे। उनकी मृत्यु देवास में हुई। किन्तु उन्हें रीवा में दफनाया गया।

छोटी दरगाह : गजरथखाना के पास छोटी दरगाह का स्थान है। किंवदन्ती है कि इमामशाह के समय में मस्तानशाह फकीर ने रीवा आकर छोटी दरगाह की स्थापना की थी। कालान्तर में छोटी दरगाह बड़ी दरगाह के नियंत्रण में आ गई।

दरगाह शमाशाह : रायपुर कर्चुलियान के प्रसिद्ध फकीर शमाशाह का स्वर्गवास रायपुर में ही हुआ था और उन्हें वहीं दफनाया गया था। मरने के लगभग बीस वर्षों के बाद उन्होंने किसी कलचुरि सरदार को स्वप्न दिया कि वह उनका शव रीवा ले चले और वहीं दफनाये। कहा जाता है कि जब उनकी कब्र खोदी गई तब उनका शव ज्यों का त्यों और उसमें किसी प्रकार की विकृति नहीं आई थी। रायपुर से उनका शव लाकर गजस्थखाना में दफनाया गया, जहाँ उनकी दरगाह अब भी विद्यमान है।[7]

भोलाशाह की दरगाह : रीवा के प्रसिद्ध फकीर भोलाशाह की दरगाह कोतवाली के पास खलग मोहल्ले में है। भोलाशाह महाराजा विक्रमादित्य (1593–1624 ई0) के समकालीन थे।

तकिया शुकरूशाह : महाराज रघुराजसिंह के शासनकाल में शुकरूशाह नामक एक प्रसिद्ध फकीर थे। आपके एक प्रसिद्ध फकीर थे। आपके तकिया में अब भी जन श्रद्धाभाव से एकत्र होते हैं।

रौजा दाराशाह : आपका स्थान रीवा के बिछिया मुहल्ले में है। आप रीवा महाराजा अजीत सिंह के समकालीन थे। मुहर्रम के अवसर पर रौजा में बहुत बड़ा जलसा मनाया जाता है।

सुविधाएँ : रीवा नगर में भ्रमण के लिये सभी प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जिसका उल्लेख रीवा की ऐतिहासिक इमारतें शीर्षक के अन्तर्गत किया गया है।

देवतालाब : रीवा मऊगंज मार्ग पर स्थित देवतालाब जिला मुख्यालय से 48 कि0मी0 दूर है। यहाँ शिव का एक प्राचीन मंदिर है, जो कलचुरिकाल का निर्माण प्रतीत होता है।

भैरव बाबा : भैरव बाबा का मंदिर रीवा गुढ़ मार्ग पर गुढ़ नगर से 4 कि0मी0 दक्षिण की ओर खामडीह मौजा में स्थित है। यहाँ पर 32 फुट ऊँची 12 फुट चौड़ी तथा 80 टन की बाबा भैरवनाथ की एक विशाल प्रतिमा है। मूर्ति लेटी हुई है और कलचुरिकालीन प्रतीत होती है। यहाँ से दो फर्लांग की दूरी पर रेणवा नदी एक सुन्दर जल प्रपात का निर्माण करती है।[4–5]

यह पर्यटन केन्द्र गुढ नगर के समीप स्थित हैं यहाँ पर कुछ छोटे–छोटे होटल है, जो उच्च स्तर के नहीं है। अतः प्राथमिक सुविधाओं का अभाव है। पर्यटक को चाहिये कि वह यहाँ का भ्रमण कर रीवा में अपने अपने आवास की व्यवस्था करें, जहाँ उच्चस्तरीय होटल और लाज हैं।[6]

खन्दो मंदिर : यह मंदिर गोविन्दगढ़ नगर की दक्षिणी पहाड़ी पर स्थित है। मंदिर काली को समर्पित हैं इसी मंदिर के समीप ग्यारह और मंदिर है, जिनमें सन्तोषी माता, दुर्गा माता, फूलमती माता, मरी माता, विष्णु हनुमान, शंकर पार्वती और गणेश किन्तु सोमवार को यहाँ अधिक श्रद्धालु एकत्र होते हैं। मकर संक्रान्ति को यहाँ मेला लगता है। खन्दों मंदिर के समीप पूर्व दिशा में एक कुण्ड है। कैमूर पहाड़ी पर स्थित एक झील का पानी इस कुण्ड में गिरता है और इस प्रकार एक प्रपात का निर्माण होता है। कुण्ड 20 फीट चौड़ा और 40 फीट लंबा है। यह स्थान पर्यटकों के आर्कषण का प्रमुख केन्द्र है।

रमागोविन्द मंदिर : यह मंदिर गोविन्दगढ़ की शोभा है। मंदिर गोविन्दगढ़ किले के मध्य में निर्मित है। मंदिर निर्माण के पश्चात किले का निर्माण हुआ और तत्पश्चात् नगर बसना प्रारंभ हुआ था। गोविन्दगढ़ रीवा महाराजा का ग्रीष्मकालीन आवास था। किले के मध्य में बने रमागोविन्द के भव्य मंदिर में राम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान जी की प्रतिमाएँ विराजमान हैं। भगवान की पूजा–अर्चना के लिये मंदिर में पुजारी नियुक्त है।[4–5]

पंचमुखी हनुमान : भारत में केवल पाँच स्थान ऐसे हैं, जहाँ पंचमुखी हनुमान के मंदिर हैं इनमें से एक मंदिर गोविन्दगढ़ में है। यह मंदिर रीवा–सीधी मार्ग पर गोविन्दगढ़ के एक चतुष्पथ पर स्थित है। स्थानीय और बाहरी पर्यटकों के लिये यह एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है।

शीतल द्वीप : गोविन्दगढ़ के विशाल और विस्तृत सरोवर के मध्य शेषशायी भगवान विष्णु का मंदिर स्थापत्य कला का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। क्योंकि यह मंदिर तालाब के मध्य में हैं। अतः नौका द्वारा ही यहाँ पहुँचा जा सकता है। भगवान की प्रतिमा अत्यन्त सुन्दर है। गोविन्दगढ़ आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा होती है।

पंच मंदिर : गोविन्दगढ़ किले के अन्दर कठबंगला के समीप पाँच मंदिर हैं, जिनमें शिव, राम, सीता, आदि की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।

पर्यटन स्थल के रूप में विकास की संभावनाएँ

गोविन्दगढ़ के किले को शीघ्र ही हेरिटेल होटल के रूप में परिवर्तित करने की योजना है। इसके अन्दर विवाह मंडप (बराज घर) तरण ताल और उद्यान का निर्माण किया जायेगा। इसके अतिरिक्त यहाँ सफेद शेर मोहन का विश्वस्तरीय स्मारक बनाने की आयोजना के साथ कार्य भी प्रारंभ कर दिया गया है। यह कार्य दिल्ली की मैकपाई न प्राटेक्कर कम्पनी के द्वारा कराया जा रहा है। इसी कम्पनी ने किले को लीज पर ले लिया है। कम्पनी के संचालन श्री एस.पी. सिंह ने बताया की जब गोविन्दगढ़ का किला पूरी तरह हेरिटेज होटल में परिवर्तन हो जाएगा, तब बहुत से स्थानीय बेरोजगार व्यक्तियों को अजीविका का साधन उपलब्ध होगा। इस समय किले तथा इसके अन्दर विद्यमान मंदिरों की साफ–सफाई का कार्य हो रहा है।[7]

सीधी जिला के धार्मिक पर्यटन स्थल

सीधी जिला मध्यप्रदेश के उत्तरी – पूर्वी भाग पर स्थित है। इस क्षेत्र के प्रमुख धार्मिक पर्यटक स्थल इस प्रकार हैं –

भंवरसेन : भंवरसेन (शिकारगंज) सतना रेलवे स्टेशन से लगभग 70 कि0मी0 दूर सतना–सीधी बाया गोविन्दगढ़ बस मार्ग पर 40 कि0मी0 दूर हत्था बस स्टैण्ड के निकट है। हत्था से भंवरसेन लगभग 5 कि0मी0 है। यहाँ जाने के लिये सार्वजनिक वाहनों का अभाव है। यह स्थल सोन–बनास नदियों के तट पर स्थित है। संगम के पूर्वी तट पर च्यवन ऋषि का आश्रम था, जिसे अब चन्द्रेह कहते हैं। कलचुरिकाल में यहाँ अनेक मंदिर और मठों का निर्माण हुआ। यहाँ पर शिव का एक विशाल मंदिर अद्यावधि विद्यमान है। इसका गर्भगृह अन्दर और बाहर दोनों ओर से वृत्ताकार हैं, जिसके साथ अन्तराल और मुखमण्डप भी बना है। मंदिर का जंघा भाग तमाल पत्र द्वारा दो भागों में विभक्त है। कलचुरियुगीन अन्य मंदिरों की भाँति इसके जंघा भग में देव मूर्तियों का अभाव है, किन्तु अन्तराल भाग में उनकी कमी नहीं है। 22 भंवरसेन (चन्द्रेह) के लिये आवागमन में कठिनाई है। यदि पर्यटक अपने वाहन से वहाँ जाये, तब सुविधा होगी। यहाँ पर रीवा महाराजा की एक कोठी है, जिसमें पर्यटक रात्रि विश्राम कर सकता है। इसके अतिरिक्त यहाँ सभी प्रकार की बुनियादी सुविधाओं का अभाव है।[7]

अनूपपुर के प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थल

अमरकण्टक : अनूपपुर जिला का निर्माण 1 नवम्बर 2000 ई0 को हुआ है। अमरकण्टक इस जिले की पुष्पराजगढ़ तहसील में स्थित है। अनूपपुर जिला बनने से पूर्व यह स्थान शहडोल जिला के अन्तर्गत था। अमरकण्टक रेलपथ पर स्थित नहीं है। कटनी बिलासपुर, रेलपथ के शहडोल अथवा पेण्ड्रा रोड स्टेशन पर स्थित नहीं है। कटनी – विलासपुर रेलपथ के शहडोल अथवा पेण्ड्रारोड स्टेशन से यहाँ जाने के लिये बस सुविधा उपलब्ध है। इसी प्रकार अमरकण्टक के लिये रीवा, इलाहाबाद, मण्डला, सिवनी, रायपुर, बिलासपुर, जबलपुर और सीधी से भी बस सेवा उपलब्ध है। वायु मार्ग द्वारा जबलपुर से इसकी दूरी 117 कि0मी0 एवं रायपुर से 220 कि0मी0 है। यह स्थान रीवा से 310 कि0मी0, पेण्ड्रारोड रेलवे स्टेशन से 105 कि0मी0 और शहडोल से 56 कि0मी0 की दूरी पर है।[4–5]

अमरमण्टक में नर्मदा तथा सोन नदियों का उद्‌गम स्थल है। समुद्र तल से 3500 फुट ऊँची मेकल पर्वत माला की गोद में स्थित अमरकण्टक को प्रकृति ने मुक्त हस्त से सौन्दर्य और प्राकृतिक सुषमा प्रदान की है। यहाँ के वनों में सागौन, सरई, सार, बीजा, महुआ, लाख, चिरौंजी, तेंदू पत्ता, गोंद और अनेक प्रकार की औषधियाँ प्राप्त होती हैं। इसके गर्भ में बहुमूल्य खनिज पदार्थो के भण्डार हैं। यह तीर्थ स्थल अपने हृदय में अनेक लोक मान्यताओं को संजोये हैं। यहाँ के झरनों और कुण्डों को देखकर पर्यटक सहज स्फूर्ति से भर उठता है।[2]

अमरकण्टक से प्रवाहित चिरकुमारी नर्मदा नदी संभवतः विश्व की एकमात्र नदी है, जिसकी परिक्रमा कर श्रद्धालु स्वयं को धन्य मानते हैं। इसे प्रदिक्षण कहा जाता है। अमरकंटक से लेकर गुजरात प्रदेश के भड़ौच तक रंगारंग मेलों और नर्मदा स्नान की धूम रहती है। महाभारत में कहा गया है कि नर्मदा और सोन नदी का उद्‌गम वंशगूल्म तीर्थ है, जहाँ स्नान करने, आचमन अथवा मार्जन करने, यहाँ तक कि जल स्पर्श करने मात्र से वाजिमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है –

मत्स्यपुराण 23 में भी कहा गया है कि अमरकण्टक पर्वत पुष्यजनक है। जो व्यक्ति चन्द्रग्रहण और सूर्य ग्रहण के समय अमरकण्टक पर्वत पर जाता है, वह अश्वमेघ यज्ञ दे दस गुना फल प्राप्त करता है, और वहाँ महेश्वर का दर्शन कर स्वर्गलोक प्राप्त करता है। सूर्य ग्रहण के अवसर पर अमरकण्टक पर्वत पर पुष्य की प्राप्ति होती है। अमरकण्टक पर्वत तीनों लोकों में विख्यात है। जो मनुष्य अमरकण्टक पर्वत की परिक्रमा करता है, वह पौण्डरीक यज्ञ का फल प्राप्त करता है।[4–5]

अमरकंटक के मंदिर : यहाँ कुल मिलाकर 24 मंदिर हैं। नर्मदा माई के प्राचीन मंदिर में नर्मदा की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। इसी मंदिर के सामने एक अन्य मंदिर में सती की प्रतिमा विराजमान है। अनुश्रुति है कि यह स्थान शिव की पत्नी सती के देहत्याग से संबंधित हैं नर्मदा कुण्ड के आस–पास श्रद्धालु भक्तों के लिये अनेक पवित्र स्थल है, जिनमें से एक कर्ण मंदिर है जिसका वर्णन इस प्रकार है –

कर्ण मन्दिर : इसे त्रि–आयतन मंदिर भी कहते हैं। इसमें एक ही अधिष्ठान पर तीन मंदिर बने होने के कारण त्रि आयतन मंदिर कहते हैं। तीनों मंदिर एक महामण्डप द्वारा संयुक्त हैं। महामण्डप वर्गाकार है। प्रधान मंदिर पूर्वाभिमुखी है तथा अन्य सहायक मंदिरों का प्रवेश द्वारा उत्तर दक्षिण की ओर है। इन तीनों मंदिरों का अन्तराल और गर्भग्रह वर्गाकार है, जो बाहर से स्परथ है।

केशवनारायण मंदिर : यह मंदिर दो मन्दिरों का समूह है और अमरकण्टक में मच्छेन्द्रनाथ मन्दिर के समीप है। मन्दिर एक ऊँचे अधिष्ठान पर बनाया गया है और कुछ समय बाद इसमें पश्चिम की ओर एक लघु मंदिर जोड़ा गया है। अतः इसका महामण्डप दोनों मंदिरों के मण्डप का कार्य करता है।

मच्छेन्द्रनाथ मंदिर : यह मंदिर त्रिआयतन के समीप है। इसका मण्डप आयताकार और गर्भग्रह वर्गाकार है, जिसमें इस समय कोई मूर्ति नहीं है। मंदिर पंचस्थ है। मंदिर की जंघा बंधन द्वारा दो भागों में विभक्त हैं इसका ऊपरी भाग निचले भाग की अपेक्षा छोटा है।

पातालेश्वर मंदिर : यह मंदिर मच्छेन्द्रनाथ मंदिर के पूर्व की ओर स्थित है। मंदिर की आयोजना मच्छेन्द्रनाथ मंदिर के समान है। मंदिर पश्चिभिमुखी है। मण्डप आयताकार और गर्भगृह वर्गाकार है। ये सभी मंदिर कलचुरिकालीन है।

ज्वालेश्वर मंदिर : अमरकंटक से लगभग 6 कि0मी0 उत्तर की ओर ज्वाला नदी की उद्‌गम है। यहाँ ज्वालेश्वर का मंदिर है। मत्स्यपुराण में कहा गया है। कि यहाँ सिद्धों द्वारा सेवित ज्वालेश्वर तीर्थ है, जिसमें स्नान कर मानव स्वर्ग लोक प्राप्त करता है। जो व्यक्ति चन्द्रग्रहण के अवसर पर प्राण त्याग करता है, वह व्यक्ति सभी कर्मों से मुक्त होकर ज्ञान विज्ञान से सम्पन्न होकर प्रलय काल तक रूद्र लोक में निवास करता है। सघन वन में होने के कारण यहाँ किसी मार्गदर्शक के साथ ही आना चाहिये।[3]

मार्कण्डेय आश्रम : अमरकण्टक से 1 कि0मी0 की दूरी पर अग्निकोण में मार्कण्डेय ऋषि की तपोभूमि है। यहाँ पर एक वृक्ष के नीचे चबूतरे पर बहुत सी देव प्रतिमाएँ रखी हैं।

भृगु कमण्डलु : यह स्थान सोन नदी के उद्‌गम से दक्षिण की ओर है। कहा जाता है। कि महर्षि भृगु ने यहाँ तपस्या की थी। उनके कमण्डलु से एक छोटी नदी का उद्‌गम हुआ, जिसे कर गंगा कहते हैं।

मच्छेन्द्रनाथ मन्दिर : यह मन्दिर त्रिआयतन के समीप है। इसका मण्डप आयताकार और गर्भग्रह वर्गाकार हैं, जिसमें इस समय कोई मूर्ति नहीं है। मन्दिर पंचस्थ है। मन्दिर की जंघा द्वारा दो भागों में विभक्त है। इसका ऊपरी भाग निचले भाग की अपेक्षा छोटा है। मध्यवर्ती रथ में दो बड़ी रथिकाएँ (देवकुलिकाएँ) हैं, जिनकी मूर्तियाँ अब लुप्त हो चुकी है।

पातालेश्वर मन्दिर : यह मन्दिर मच्छेन्द्रनाथ मन्दिर के पूर्व की ओर स्थित है। मन्दिर की आयोजना मच्छेन्द्रनाथ मन्दिर के समान है। मन्दिर पश्चिभिमुखी है। मण्डप जायताकार और गर्भगृह वर्माकार है। ये सभी मन्दिर कलचुरिकालीन है।

ज्वालेश्वर मन्दिर : अमरकण्टक से लगभग के कि0मी0 उत्तर की ओर ज्वाला नदी का उद्गम है। यहाँ ज्वालेश्वर का मन्दिर है। मत्स्यपुराण 24 में कहा गया है कि यहाँ सिद्धों द्वारा सेवित ज्वालेश्वर तीर्थ है, जिसमें स्नान कर मानव स्वर्गलोक प्राप्त करता है। जो व्यक्ति चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण के अवसर पर प्राण त्याग करता है, वह व्यक्ति सभी कर्मो से मुक्त होकर ज्ञान–विज्ञान से सम्पन्न प्रलय काल तक रूद्र लोक में निवास करता है। सघन वन में होने के कारण यहाँ किसी मार्गदर्शक के साथ ही आना चाहिये।[4–5]

मार्कण्डेय आश्रम : अमरकण्टक से 1 कि0मी0 की दूरी पर अग्निकोण में मार्कण्डेय ऋषि की तपोभूमि है। यहाँ पर एक वृक्ष के नीचे चबूतरे पर बहुत सी देव प्रतिमाएँ रखी हैं।

भृगु कमण्डलु : यह स्थान सोन नदी के उद्गम से दक्षिण की ओर है। कहा जाता है कि महर्षि भृगु ने यहाँ तपस्या की थी। उनके कमण्डलु से एक छोटी नदी का उद्गम हुआ, जिसे कर – गंगा कहते हैं।

कबीर चौतरा : अमरकण्टक से 5 कि0मी0 की दूरी पर नर्मदा परिक्रमा मार्ग पर यह स्थान है। कबीरदास ने कुछ समय तक यहाँ निवास किया था। अमरकंटक से यहाँ तक मार्ग बना हुआ है। किन्तु यह स्थान हिंसक पशुओं के कारण अगम्य है।[4–5]

पर्वतारोहण : मेकल पर्वत श्रेणियाँ पर्वतारोहण के लिये उपयुक्त है। अमरकंटक में साहसिक पर्यटन का भरपूर आनन्द लिया जा सकता है। प्रायः यहाँ स्काउट दल प्रशिक्षण के लिये आता रहता है।

आवास : अमरकंटक में अहिल्याबाई धर्मशाला है, जहाँ पर्यटक विश्राम के लिये रूक सकता है। इसके अतिरिक्त अब यहाँ पर कई पर्यटक विश्राम के लिये रूक सकता है। इसके अतिरिक्त अब यहाँ पर कई सुविधाजनक होटल खुल गये हैं। जहाँ बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध है। मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम का होलीडे होम होटल में भी सभी प्रकार की सुविधाएँ हैं।[7]

नर्मदा : नर्मदा भारत की उन पवित्रतम नदियों में से एक है, जिसे वैदिककाल से लेकर आधुनिक काल तक समान रूप से सम्मान प्राप्त है। विभिन्न पुराणों में इसका विस्तृत वर्णन किया गया है। पुराण में कहा गया है –

अर्थात् गंगा हरद्वारा में तथा सरस्वती कुरूक्षेत्र में अत्यन्त पुण्यमयी कही गयी है, किन्तु नर्मदा चाहे गाँव से प्रवाहित हो रही हो। अथवा वनों से सर्वत्र पुण्यमयी है। सरस्वती का जल तीन दिनों में, यमुना का एक सप्ताह में तथा गंगा का जल स्पर्श मात्र से पवित्र कर देता है, किन्तु नर्मदा जल दर्शन मात्र से पवित्र कर देता है। मत्स्यपुराण में नर्मदा के माहात्म्य का वर्णन करते हुए कहा गए हैं –

अर्थात् अकाम हो या सकाय, जो मनुष्य नर्मदा के शुभदायक जल में स्नान करता है, वह सभी पापों से छुटकारा पाकर रूद्रलोक को प्राप्त करता है।

नर्मदा नदी का उद्गम नर्मदा कुण्ड से है। कुछ विद्वानों का कथन है कि अमरकण्टक का प्राचीन नाम अमरकण्ठ था। भगवान शंकर को भी अमरकण्ठ कहते हैं। मेकल पर्वत से निकलने के कारण इसे मेकलसुता भी कहते हैं। पर्वतों और पहाड़ियों में अपनी चंचल वेगवती धारा के कारण इसे रेवा भी कहते हैं। नर्मदा की उत्पत्ति से संबंधित एक और अनुभूति प्रचलित है। कहते हैं कि जब सृष्टिकर्ता ब्रह्म की आँखों से आँसू अमरकण्टक पर गिरे, तब उनसे दो नदियाँ प्रवाहित हुई – पहली नर्मदा और दूसरी सोन। यद्यपि दोनों का उद्गम एक ही स्थान से है, तथापि उनका जलप्रवाह अलग–अलग दिशाओं में हैं। नर्मदा पश्चिम की ओर बहती हुई भड़ौच के पास अरब सागर में गिरती है। और सोन पूर्व की बहाती हुई बिहार प्रदेश में गंगा नदी में मिल जाती है। अमरकोश में नर्मदा के चार नाम बताये गये हैं।

नर्मदा नदी की परिक्रमा : प्राचीन काल से ही हमारे ऋषि–मुनि पर्यटन को विशेष महत्व देते रहे हैं। वे भूमण्डल तथा पर्वतों की परिक्रमा करते रहे हैं। प्रायः प्रमुख तीर्थो मं पंचकोशी परिक्रमा का विधान किया गया है। उसी परम्परा में नर्मदा नदी की परिक्रमा की जाती है। यह परिक्रमा दो प्रकार से की जाती है। रूण्ड परिक्रमा और जिल्हेड़ी परिक्रमा। रूण्ड परिक्रमा उसे कहते हैं, जिसमें नर्मदा नदी के दक्षिणी तट से यात्रा प्रारंभ कर समुद्र पार कर उत्तर तट से अमरकण्टक होकर अपने पूर्व स्थान में पहुँचकर यात्रा समाप्त करें। अधिकांश लोग नर्मदा के उद्गम स्थान के दक्षिणी तट से यात्रा प्रारंभ कर प्रदक्षिणा क्रम से समुद्र पार कर उत्तरी तट से अमरकंटक पहुँचकर पूरी करते हैं। तत्पश्चात् अमरकंटक की पंचकोशी यात्रा करके नर्मदा कुण्ड का जल लेकर ओकारेश्वर जाते हैं। और शिव का श्रद्धा भक्ति से पूजन कर परिक्रमा यात्रा समाप्त करते हैं। यात्रा समाप्त कर यात्री मुण्डन कराकर अपनी सामर्थ्य के अनुसार साधू–संतों ब्राह्मणों और दीन–हीन, लूले–लंगड़े व्यक्तियों को भोजन कराकर दक्षिणा प्रदान करते हैं।[2]

दूसरी जिल्हेड़ी परिक्रमा में यात्री अमरकण्टक पहुँचकर उद्गम स्थान के उत्तरी तट से उलटे क्रम से प्रदक्षिणा प्रारंभ करते हैं। समस्त नियमों का पालन करे हुए उत्तरी तट से समुद्र तट की यात्रा की जाती है। तत्पश्चात् बिना समुद्र पार किये ही वापस लौटकर अमरकण्टक आ जाते हैं। नर्मदा की विधिवत पूजा कर नर्मदा कुण्ड से जल लेकर ओंकारेश्वर जाते हैं और मुण्डन कराकर यथाशक्ति दान–दक्षिणा देते हैं। इस परिक्रमा में साढ़े सात वर्ष का समय लगता है। यह परिक्रमा श्रम साध्य होने के कारण बहुत कम लोग ही कर पाते हैं।

दोनों प्रकार की परिक्रमा में शूलपाणि झाड़ी नर्मदा के दोनों किनारों पर पड़ती है और लगभग 180 मील है। यहाँ के निवासी भील जाति के लोग परिक्रमा करने वाले यात्रियों को लूट लेते हैं। किन्तु यात्री जिस गाँव में विश्राम करते हैं, उस ग्राम के निवासी लूट नहीं करते। एक गाँव के व्यक्ति दूसरे गाँव के बसने वाले यात्रियों को लूटते हैं। विरोध करने पर वे हत्या करने से भी नहीं चूकते हैं। यदि कोई यात्री किसी भील के घर पर आश्रय लेता है, तब उसका समुचित सत्कार किया जाता है। वास्तव में शूलपाणि झाड़ी की यात्रा में अत्यन्त धैर्य और विवेक की आवश्यकता होती है।[4–5]

सोनमूड़ा प्रपात : अनूपपुर जिला के अमरकण्टक जिले में प्रपातों के अन्तर्गत रखावल सोन और नर्मदा के जल प्रपात हैं। सोनमूड़ा

प्रपात नर्मदा कुण्ड से लगभग 2 कि0मी0 दूर अग्निकोण में मेकल की पूर्वी ढलान पर स्थित है। प्रपात के ऊपरी पहाड़ की ढलान का पानी एकत्र होकर नीचे गिरता है। प्रपात से लगभग 100 फुट ऊपर आम के वृक्ष के नीचे एक छोटा सा पक्का कुण्ड है। यही सोन का उद्‌गम स्थान है। नदी इस कुण्ड से एक पतली धारा के रूप में प्रवाहित होती है। जल धारा सोनमूड़ा प्रपात तक आती है और नीचे की ओर गिरती है। इस प्रपात की गहराई 350 फुट है। वर्षाकाल में प्रपात की जलधारा क्षीण हो जाती है। क्योंकि ऊपरी भाग में सोन नदी का जलग्रहण क्षेत्र सीमित हो जाता है। सोननद का यह पहला प्रपात है।[7]

कपिलधारा प्रपात : अमरकण्टक में नर्मदा नदी के उद्‌गम स्थान से पश्चिम दिशा की ओर लगभग 6 कि0मी0 की दूरी पर कपिलधारा प्रपात है। यह नर्मदा का पहला प्रपात है। कुण्ड के परकोटा से निकलते ही गोमुख से जिस छोटे से कुंड़े में जलधारा गिरती है, उसे कोटितीर्थ कहते हैं। यहाँ से पतली जलधारा आगे बढ़ती हैं, उसे देखकर यह अनुमान करना कठिन है कि यह पतली जलधारा चट्‌टानी अवरोधों को पारकर आगे बढ़ेगी। कल्याण आश्रम के दक्षिण में नर्मदा को बांधकर एक सरोवर का निर्माण कर दिया गया है, जिसमें स्नान करने से संचित पापों के छय की एक अनुश्रुति प्रचलित है।[5]

दुग्धधारा जल प्रपात : कपिलधारा जल प्रपात से लगभग 50 मीटर आगे पश्चिम की ओर घनघोर जंगल के मध्य दुग्धधारा जल प्रपात है। इस प्रपात की जलधारा 3 मीटर की ऊँचाई से चट्‌टानों से टकराती हुई नीचे गिरती हैं। प्रपात के ऊतरी तट पर पहाड़ी पर एक प्राकृतिक गुफा है जिसे रहने योग्य बना लिया गया है। यहाँ पर एक महात्मा रहते हैं यहाँ पर नर्मदा को पार करने के लिये लकड़ी का एक काम चलाऊ पुल है। पुल से कंदरा तक जाने के लिये लकड़ियों की ही सीढ़ियाँ हैं। यहाँ तक बहुत कम यात्री पहुँच पाते हैं। इसका प्रमुख कारण मार्ग का ऊबड़–खाबड़ होना है। इसके साथ ही यहाँ हिंसक पशुओं की अधिकता है।[4–5]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. खत्री, हरीश– पर्यटन भूगोल, कैलाश पुस्तक सदन भोपाल, म. प्र.।
2. दीक्षित, के.के. एवं गुप्ता जे.पी. – पर्यटन के विविध आयाम।
3. वत्रा, जी.एस. – टूरिज्म प्रोमोशन एण्ड डेवलमेन्ट नई दिल्ली।
4. स्वयं प्रत्यक्ष रूप से देखा और निरीक्षण किया।
5. समाचार पत्रों के माध्यम से।
6. देवभूमि समाचार (हिन्दी न्यूज पोर्टल)
7. दैनिक जागरण, रीवा, 15 जून, 2010.